बी॰ए॰तृतीयवर्ष - रमेश कुमार यादव
हिन्दी- प्रतिष्ठा हिन्दी- विभाग
डी॰के॰कालेज,डुमराँव,
बक्सर- (बिहार)

प्रश्न :- 'बिहारी श्रृंगार रस के सर्वश्रेष्ठ कवि है।' इस कथन की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए॥।

उत्तर- बिहारी हिन्दी के रससिद्ध कवि है। इनमे श्रृंगार के उभय पक्षो का चित्रण मिलता है। संयोग-काल की कोई ऐसी स्थिति नहीं है, जिस पर इनकी नजर न गयी हो। प्रेम में पहली दृष्टि रूप पर पड़ती है। बिहारी ने रूप-शोभा-वर्णन में मोहक चातुरी का परिचय दिया है। ललाट पर बिंदी देने से अथवा कुटिल अलकों के सिर पर से उतर कर मुख पर आ जाने से मुख जिस अद्वितीय सौंदर्य से मंडित हो जाता है, उसकी इनमें खूब परख है। एक उदाहरण देखा जा सकता है—

कहत सबै बेंदी दिये आँक दसगुनो होत।
तिय लिलार बेंदी दिये, अगनित बढ़त उदोत॥

वय: संधि में एक ओर जाते हुए बचपन का अल्हडपन भी रहता है और आती हुई जवानी का जोर भी। इन दोनो के संयोग से उत्पन्न स्त्री के धूप-छाँही रंग का बिहारी ने निम्नांकित दोहे में बड़ा मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है–

छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबन अंग।
दीपति देह दुहून मिलि, दीपति तापत रंग॥

नायिका के सौकुमार्य - वर्णन में भी बिहारी ने अप्रति कला- कुशलता का परिचय दिया है ——

भूषण-भार सँभारित है, क्यों यह तन सुकुमार ।
सूधो पॉयन परत नहि सोभा ही के भार ॥

जैसे दोहों से सुकुमारता की अतिशयता बड़े मोहक ढंग से व्यंजित हुई है। व्यंग्य के समावेश ने भी बिहारी के दोहों में इतनी अर्थ-गरिमा भर दी है जिससे उनमें भावों की व्यापकता आ गयी है। सुकुमारता के चित्रण में इन्होंने कही-कही ऊहात्मक पद्धति से भी काम लिया है। वहाँ इनका लक्ष्य चमत्कार की सृष्टि करना रहा है। रूप-वर्णन के साथ-साथ इन्होंने नायिका के प्रत्येक हाव-भाव का भी बड़ा सुन्दर चित्र उपस्थित कर अपनी मनोवैज्ञानिक सूझ का परिचय दिया है।

रूप-दर्शन आकर्षण को जन्म देता है। बिहारी ने नायिका के रूप का वर्णन किया है। आकर्षित नायक को होना चाहिए था, पर नायक से अधिक इनकी दृष्टि नायिका पर ही है। नायिका आकर्षित होती है, नायक के लिए प्रेम की पीड़ा का अनुभव करती है, गुरुजनों और परिजनों की आँखें बचाकर अभिर में निकली नायिका के साथ दूती भी रहती है। एकांत में वह नायक से मिलती है। थोड़ी देर तक 'नाही' नाही करने के बाद सुख से सुरत में लीन हो जाती है। इस प्रकार बिहारी का संयोग-श्रृंगार अभिलाषा से प्रारम्भ होकर रूप वर्णन, दर्शन चुम्बन, आलिंगन आदि से होते हुए, सुरत में जाकर समाप्त हो जाता है। संयोग व्यापार में रत नायक नायिकाओं की कुछ ऐसी चेष्टाओं का भी वर्णन किया है।

बिहारी ने नायिका के बाह्य नख-शिख वर्णन के साथ-साथ उसकी प्रेम संबंधी आन्तरिक अनुभूतियों का अंकन भी मार्मिकता के साथ किया है—

प्रिय के ध्यान गही गही, रही वही है नारि।
आपु आपु ही आरसी, लखि रीझत रिझवारि॥

में प्रेम की अनन्यता की उस चरमावस्था की व्यंजना हुई है, जहाँ आश्रय और आलंबन- नायिका और नायक मिलकर एक हो गये हैं। सूरदास के 'राधा- माधव, माधव-राधा, कीट भृंग गति है जु भई।' या विद्यापति के 'अनुखन माधव माधव सुमिरत सुन्दरी भेलि मधाई' में प्रेम की इसी अनन्यता का चित्रण हुआ है।

बिहारी को वियोग- वर्णन में उतनी सफलता नहीं मिल पाई है जितनी संयोग - वर्णन में। कारण यह है कि वियोग- वर्णन में इनकी दृष्टि स्वाभाविक चित्रण से हटकर चमत्कार - सृष्टि और अत्युक्ति- पूर्ण कथन की ओर लग गई है। विरह में इनकी नायिका इतनी कृश हो गयी है कि जब वह साँस लेती है तब छह-सात हाथ पीछे और जब साँस छोड़ती है तब छह-सात हाथ आगे चली जाती है, मानों वह झूले में पेंग भर रही है —

इत आवति चलि जात उत, चली छ-सातक हाथ।
चढ़ी हिंडोले सी रहै, लगी उसासनि साथ॥

इसी प्रकार इनकी एक विरहिणी नायिका के शरीर से इतनी विरह-ज्वाला निकलती दिखाई गयी है कि भय के मारे उसकी सखियाँ जाड़े की रात में भी गीले वस्त्र पहनकर स्नेह-वश उसके निकट जाने का साहस करती हैं-

आड़े दै आले बसन, जाड़े हूँ की रात।
साहस ककै सनेह बस, सखी सबै ढिग जाति ।।

विरह ताप के आधिक्य की यह सूचना पाठकों के हृदय को द्रवित नहीं करती। इससे विरह की गंभीरता की भावना उत्पन्न होने के बदले हँसी आती है। पर बिहारी में कहीं-कहीं वियोग के स्वाभाविक चित्र भी मिलते हैं। नीचे के दोहे में विरहजन्य कृशता और मानसिक उद्वेग की सहज अभिव्यक्ति हुई है:—

'कर के मीड़े कुसुम लौं गई बिरह कुम्हिलाइ।
सदा समीपिनि सखिन हूँ, नीठि पिछानी जाइ।।

बिहारी का समस्त जीवन काव्य-साधना में ही व्यतीत हुआ, इसलिए उनका एक-एक दोहा मर्मस्पर्शी है। ये सौंदर्य तथा प्रेम-क्रीड़ा की मनोरम झांकियाँ प्रस्तुत करते हैं। बिहारी अपने संक्षिप्त वर्णन और नपे-तुले शब्दों में किसी वस्तु, व्यक्ति या भाव का जगमगाता रूप निखार कर प्रस्तुत करते है। उनके रूप

वर्णन, वय-संधि के चित्रण तथा मादक युवावस्था की मधुर झलकें मन को मुग्ध कर लेती हैं और ये चित्रण केवल काल्पनिक न होकर जीवन के यथार्थ रूप हैं। बिहारी ने अपनी पैनी दृष्टि से जीवन का निरीक्षण किया था। इसलिए उन्होंने युवा वृत्तियों का सजीव चित्रण किया है। श्रृंगार के संयोग-पक्ष के चित्रण में वे सिद्धहस्त हैं। आन्तरिक भावना से प्रेरित शारीरिक चेष्टाओं तथा विभिन्न कार्य-कलाप का चित्रण बिहारी इस प्रकार करते है कि वह मानसपटल पर सदा के लिए अंकित हो जाता है। वे अपने भावों और विचारों को कलात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं। भक्ति और नीति के मार्मिक दोहे भी उन्होंने लिखे हैं।

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)